E-CONTENT FOR SEMESTER II

अनुभववाद – 3 (EMPIRICISM – 3)

BY: SWATI SOURAV
POSTGRADUATE DEARTMENT OF SOCIOLOGY
PATNA UNIVERSITY

डेविड हुम (1711-1776)
DAVID HUME (1711-1776)

- डेविड हुम का जन्म 7 मई, 1711 ई.सन में इंग्लैंड के एडिनबर्घ शहर में हुआ था।
- स्कॉटिश दार्शनिक, डेविड ह्यूम ने अंग्रेजी में अपने कामों में योगदान दिया।
- उनकी प्रमुख दार्शनिक कृतियाँ हैं – ए ट्रीटीज़ ऑफ़ ह्यूमन नेचर, दी इन्क्वारीज़ कंसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग, 1748, कंसर्निंग द प्रिंसिपल्स ऑफ़ मॉरल्स, 1751, एवं साथ ही साथ उनके मरणोपरांत प्रकाशित डायलॉग्स कंसर्निंग नेचुरल रिलिजन, 1779।
- ये सभी कार्य उनके कई समकालीनों द्वारा संदेह और नास्तिकता के कार्यों के रूप में निरूपित किये जाने के बावज़ूद व्यापक रूप से और गहराई से प्रभावशाली रहे हैं।

हुम का अनुभववाद का सिद्धांत (Hume's Theory of Empiricism)

- हुम ने तर्क दिया कि मनुष्य वास्तव में भौतिक दुनिया में रहते हैं और कार्य करते हैं, हमें यह देखने का प्रयास करना चाहिए कि वे ऐसा कैसे करते हैं।
- उनके अनुसार, दर्शन का उचित लक्ष्य केवल यह स्पष्ट करना है कि हम क्यों मानते हैं कि हम क्या करते हैं।
- मानवीय विश्वास के हुम का विश्लेषण हमारी धारणाओं या छापों (impressions) की मानसिक सामग्रीओं (mental contents) के बीच सावधानीपूर्वक अन्तर के साथ शुरू होता है, जो तात्कालिक अनुभव के प्रत्यक्ष, ज्वलंत और सशक्त उत्पाद हैं।
- विचार इन मूल छापों की केवल प्रतियां मात्र हैं। जैसे कि पेड़ का रंग जिस पर मैं अभी देख रही हु, एक धारण है, एक छाप है। जबकि मेरी माँ के बालो के रंग की मेरी याद महज़ एक विचार है।
- चूंकि प्रत्येक विचार को एक पूर्व धारणा से प्राप्त किया जाना चाहिए, ह्यूम का मानना है कि यह हमेशा समझ में आता है कि विचार की उत्पत्ति के बारे में पूछताछ करने के लिए पूछना होगा कि यह किस धारणा से निकला है।

To be Cont.

- एक विचार का दूसरे से स्पष्ट संबंध वास्तव में उस संगति का परिणाम है जिसे हम स्वयं निर्मित करते हैं।
- हम अपने मानसिक संचालन का उपयोग विचारों को एक दूसरे से तीन तरीकों से जोड़ने के लिए करते हैं: समानता, संदर्भ, या कारण और प्रभाव।
- अनुभव हमें दोनों विचारों के साथ और उनके संघों के बारे में हमारी जागरूकता प्रदान करता है।
- सभी मानव विश्वास इन सरल संघों के बार-बार आने वाले अनुप्रयोगों के परिणामस्वरूप होते हैं।
- इस तरह के विश्वास, कारण और प्रभाव के अनुमानित कनेक्शन की अपील करके, वर्तमान भावना-छापों और स्मृति की सामग्री से परे पहुंच सकते हैं। लेकिन चूंकि प्रत्येक विचार हर दूसरे से अलग और अलग है, इसलिए कोई स्पष्ट संबंध नहीं है।
- ये सम्बन्ध केवल समान मामलों के हमारे अनुभव से प्राप्त किए जा सकते हैं।
- ह्यूम का तर्क है कि कारण तर्क या तर्क संगत तर्क (causal reasoning) को कभी तर्कसंगत नहीं ठहराया जा सकता है। सीखने के लिए, हमें यह मान लेना चाहिए कि हमारे पिछले अनुभव वर्तमान और भविष्य के मामलों के लिए कुछ प्रासंगिक हैं।

To be Cont.

- हालाँकि हम वास्तव में मानते हैं कि भविष्य अतीत की तरह होगा, इस विश्वास की सच्चाई स्वयं स्पष्ट नहीं है।
- वास्तव में, प्रकृति को बदलना हमेशा संभव होता है, इसलिए अतीत से भविष्य तक के अनुमान कभी तर्कसंगत नहीं होते हैं। इस प्रकार, ह्यूम के विचार में, तथ्य की बात के रूप में सभी विश्वास मौलिक रूप से गैर-तर्कसंगत हैं।
- उदाहरण के लिए, हम मानते हैं कि दिन और रात हमेशा रहेंगे। स्पष्ट रूप से, यह तथ्य की बात है; यह हमारे विश्वास पर टिकी हुई है कि दिन और रात पृथ्वी के घूमने से होते हैं। लेकिन उस कारण संबंध में हमारा विश्वास अतीत की टिप्पणियों पर आधारित है, और हमारा विश्वास कि हमेशा ऐसा रहेगा अतीत के संदर्भ में इसे उचित नहीं ठहराया जा सकता। इसलिए हमारे पास यह मानने का कोई तर्कसंगत आधार नहीं है कि दिन और रात हमेशा रहेंगे। फिर भी हम इसे मानते हैं।
- संदेहवाद हमें हमारे वर्तमान अनुभव और स्मृति की सामग्री से परे अलग करने के लिए मना करता है, फिर भी हमें इससे कहीं अधिक विश्वास करना पूरी तरह से स्वाभाविक लगता है।

To be Cont.

- ह्यूम ने कहा कि इन अनुचित मान्यताओं को रीति या आदत के संदर्भ में समझाया जा सकता है। ऐसा हम अनुभव से सीखते हैं।
- उनका कहना है – जब भी मैं अपने अनुभव में घटनाओं के निरंतर संयोजन का निरीक्षण करता हूं, तो मैं उन्हें एक-दूसरे से जोड़ने का आदी होने लगता हूं। हालांकि दिन और रात के पिछले कई मामले प्रकृति के भविष्य की गारंटी नहीं देते हैं, लेकिन मेरा अनुभव उन्हें इस विचार से अभिप्रेरित करता है और मुझे एक उम्मीद पैदा करता है कि दिन और रात होंगे। मैं यह साबित नहीं कर सकता कि यह होगा, लेकिन मुझे लगता है कि यह होना चाहिए।
- याद रखें कि विचारों का जुड़ाव एक शक्तिशाली प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसमें अलग-अलग विचारों को एक साथ जोड़कर ध्यान में रखा जाता है।
- बेशक वे तर्कसंगत तरीकों से एक दूसरे के साथ जुड़े हो सकते हैं, क्योंकि वे उन विचारों के संबंधों में हैं जो गणितीय ज्ञान का गठन करते हैं।
- लेकिन, जहां तक यह संभव है, ह्यूम ने तर्क दिया, कारण एक धीमी और अक्षम मार्गदर्शिका है, जबकि बहुत दोहराव से हासिल की गई आदतें एक शक्तिशाली दृढ़ विश्वास पैदा कर सकती हैं जो कारण से स्वतंत्र है, अर्थार्थ करण पर निर्भर नहीं है।

To be Cont.

- तथ्य के मामलों में हमारी मान्यताएं तर्क के बजे भावुकता से पैदा होती हैं।
- हम के लिए कल्पना और मान्यता केवल विश्वास की डिग्री में भिन्न होते हैं, जिसके साथ उनकी वस्तुओं का अनुमान लगाया जाता है।
- हालांकि यह सकारात्मक आदत जीवन और सभी प्राकृतिक विज्ञानों की नींव की मार्गदर्शिका है।
- ह्यूम ने कहा कि आदिम मानव की मान्यता है कि हम वास्तव में भौतिक वस्तुओं को स्वयं देखते हैं (और सुनते हैं, आदि)।लेकिन आधुनिक दर्शन और विज्ञान ने हमें समझा दिया है कि यह अक्षरशः सत्य नहीं है।
- प्रतिनिधित्ववादी दर्शन के अनुसार, हमारे पास प्रकल्पित कारण का कोई प्रत्यक्ष अनुभव नहीं है।
- यदि हम वस्तुओं को केवल विचारों के माध्यम से जानते हैं, तो हम उन विचारों का उपयोग उन चीजों और वस्तुओं के बीच एक कारण संबंध स्थापित करने के लिए नहीं कर सकते हैं, जिनका वे प्रतिनिधित्व करने वाले हैं।

To be Cont.

- वास्तव में, ह्यूम का मानना था कि एक बाहरी दुनिया की वास्तविकता में हमारा विश्वास पूरी तरह से गैर-तर्कसंगत है।
- यह या तो विचारों के सम्बन्ध के रूप में या तथ्यों के रूप में भी नहीं मन जा सकता है। यद्यपि यह सर्वथा अनुचित है, तथापि, बाहरी दुनिया में विश्वास स्वाभाविक और अपरिहार्य है।
- हम यह मानने के आदी हैं कि हमारे विचारों में बाहरी संदर्भ हैं, भले ही हमारे पास ऐसा करने के लिए कोई वास्तविक सबूत न हो।
- हूम ने खुद को माना कि उन्हें अनुभववादी कार्यक्रम को कठोर स्थिरता के साथ पूरा करना है।
- लॉक ने ईमानदारी से अनुभव से ज्ञान प्राप्त करने की संभावना का प्रस्ताव रखा। लेकिन, इसे बहुत दूर तक नहीं ले जाया गया और बर्कली ने आगे के निहितार्थों पर ध्यान दिया।
- इसके बाद हूम ने दिखाया कि अनुभववाद अनिवार्य रूप से एक पूर्ण और कुल संदेह की ओर जाता है।
- हूम के अनुसार, सुध गणित का ज्ञान सुरक्षित विचार के बारे में कुछ भी विचार किये बिना विचारों के संबंधों पर टिकी हुई है।

To be Cont.

- प्रायोगिक अवलोकन जो भौतिक वस्तुओं के अस्तित्व के किसी भी धारणा के बिना आयोजित किये गए थे, हमें अपने अनुभवों का उपयोग करके अपनी आदतों को बनाने की अनुमति देते हैं।
- किसी अन्य शिक्षा-मीमांसा का प्रयास विशेष रूप से यदि इसमें उपयोगी अमूर्त ज्ञान प्राप्त करने का ढोंग शामिल है तो यह अर्थहीन और अविश्वसनीय है।
- हम ने मन है कि सबसे उचित स्थिति एक संक्षिप्त संदेहवाद है जो गणित और विज्ञान के वैध उद्देश्यों का पीछा करते हुए मानव ज्ञान की सीमओं को विनम्रता से स्वीकार करता है।
- हमारे गैर-दार्शनिक क्षणों में हमें निश्चित रूप से रोज़मर्रा के जीवन की प्राकृतिक मान्यताओं पर, चाहे वे कितने भी कम तर्कसंगत हों, वापस फेंक दिया जायेगा।
- हम ने सोचा कि मनुष्य विभिन्न धारणाओं का एक बंडल है और इस अर्थ में उसकी कोई निश्चित पहचान नहीं।
- उन्होंने इस विचार कीई आलोचना की कि हर चीज़ का एक कारण होता है। वास्तव में उन्होंने उन सभी चीजों पर संदेह किया जो हम अपने सामान्य ज्ञान के आधार पर और वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर भी मानते हैं।

निष्कर्ष (CONCLUSION)

- दार्शनिकों को हुम के मर्मज्ञ संदेह का जवाब देना मुश्किल लगा।
- हुम ने ज्ञान के सिद्धांतो के बारे में दार्शनिक बहस को प्रभावित किया।
- यह अनुभववाद है जिसमे प्रमुख केंद्र अनुभव पर दिया गया और बाकी सभी करण संबंधों को अस्वीकार किया गया।
- एक वाक्य में कहें टो अनुभववाद का मानना है: हाथ कंगन को आरसी क्या। अर्थार्थ जो देखो उसी पर विश्वास करो, वही सत्य है।

"seeing is believing"

धन्यवाद